अपचारी एवं सामान्य बालकों की आक्रमकता का तुलनात्मक अध्ययन

पियूषा मोरे
व्याख्याता, शिक्षा विभाग, बी.सी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, देवास (मध्य प्रदेश) भारत

सारांश

शोध अध्ययन में अपचारी एवं सामान्य बालकों की आक्रमकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध कार्य सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। न्यादर्श हेतु उज्जैन शहर के सुधार गृह के 15 और देवास शहर के उत्कृष्ट विद्यालय के 15 बालकों को लिया गया है। इन विद्यार्थियों के परीक्षण हेतु कु. रोमा पाल और श्रीमती तसनीम नकवी द्वारा निर्मित आक्रमकता मापनी का प्रयोग किया गया। अपचारी बालकों में सामान्य बालकों से अधिक आक्रमकता का स्तर सार्थक उच्च पाया गया।

***मुख्यबिन्दु* :–** अपचारी, सामान्य बालक एवं आक्रमकता।

I प्रस्तावना

प्रत्येक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक सामान्य बालक आते है। इनके अलावा कुछ ऐसे बालक भी होते हैं, जिनकी अपनी कुछ शारीरिक और मानसिक विशेषताएँ होती हैं। इनमें कुछ प्रतिभाशाली, कुछ मंदबुद्धि, कुछ पिछड़े हुए और कुछ शारीरिक दोषों वाले होते हैं। इनको "विशिष्ट बालकों" अथवा "अपवादात्मक बालकों" की संज्ञा दी जाती है। इन विशिष्ट बालकों में प्रायः बाल–अपचार के स्वरूप को सरलता पूर्वक समझ सकते हैं। जैसे– चोरी करना, झूठ बोलना, नशा करना आदि। इन बाल–अपचार के कुछ लक्षणों के साथ ही कारणों से इन बालकों की बुद्धि की व्याख्या की जा सकती हैं इन कारणों में– आनुवंशिक कारण, शारीरिक कारण, मनोवैज्ञानिक कारण, सामाजिक कारण, पारिवारिक कारण, विद्यालय–सम्बन्धी कारण, संवाद–वाहन के साधन, सांस्कृतिक कारण इन कारणों से ही बाल–अपचार की पहचान की जा सकती है। पहचान के साथ बाल–अपचार का निवारण, रोकने के लिए परिवार, विद्यालय, समाज और राज्य, संगठन उपयुक्त परामर्श से निवारण किया जा सकता है। इन बालकों के निवारण या अपचार से रोकने के साथ ही उपचार भी दिया जा सकता है जो मनोवैज्ञानिक, वैधानिक हो सकता है। इन बालकों के साथ ही आक्रमक बालक की पहचान कर सही समय पर पर्याप्त निर्देशन दिया जाए।

II अपचारी से आशय

जिन बच्चों को अपने माता–पिता अथवा उनके स्थान पर अन्य किसी व्यक्ति का पर्याप्त स्नेह नहीं मिलता, वे कालान्तर में असामाजिक व्यवहार करने लगते हैं और कभी–कभी तो वे अपचारी बन जाते हैं। अपचारी बालकों का गहन अध्ययन करने वाले मनोवैज्ञानिकों का मत है कि कोई बालक अपचारी उस समय बनता है जब उसके जीवन की परिस्थितियाँ, अपूर्ण रह जाती हैं। अपचार, दुखद परिस्थितियों, अपूर्ण इच्छाओं को असामाजिक रूप से तृप्त करने का प्रयास है। इस प्रकार बालक के व्यक्तित्व के विकारा पर माता–पिता के स्नेह का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

(क) सामान्य बालक से आशय

सामान्य बालक औसत शरीर, सामन्य शारीरिक परिश्रम करने वाले एवं बौद्धिक स्तर सामान्यतः 90 से 110 बुद्धिलब्धि सीमा के मध्य होता है। शैक्षिक उपलब्धि में औसत होते हुए सभी विषयों को सामान्य महत्व देते हैं। साथ ही शिक्षक एवं घर पर दिए गए कार्य को लगन के साथ पूरा करते हैं।

(ख) आक्रमकता से आशय

आक्रमक बालकों का निश्चित शारीरिक बनावट नहीं होती। प्रायः सामान्य बुद्धिलब्धि सीमा के होते हुए भी वे आक्रमक होते हैं। आक्रमक बालक का स्वभाव प्रायः स्कूल, घर, सरकारी सम्पत्ति का अनावश्यक दुरूपयोग, नियमों की अवहेलना, अकारण नाराज हो जाना, दूसरों को सामान्य शारीरिक एवं मानसिक कष्ट पहुँचाना एवं अनावश्यक प्रश्न करके लोगों को परेशान करना होता है।

III उद्देश्य तथा शोध विधि

(क) उद्देश्य

अपचारी एवं सामान्य बालकों की आक्रमकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ख) परिकल्पना

अपचारी एवं सामान्य बालकों की आक्रमकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

(ग) न्यादर्श

न्यादर्श हेतु उज्जैन शहर के सुधार गृह के 15 और देवास शहर के उत्कृष्ट विद्यालय के 15 बालकों को लिया गया है।

(घ)शोध विधि

शोध अध्ययन में शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

(च) उपकरण

शोध कार्य में विद्यार्थियों के परीक्षण हेतु कु. रोमा पाल और श्रीमती तसनीम नकवी द्वारा निर्मित आक्रमकता मापनी का प्रयोग किया गया। अपचारी एवं सामान्य बालकों की आक्रमकता के लिए मध्यमान (M) प्रमाणित विचलन (SD) तथा t का मानों का सारांश –

सारिणी 1
अवचारी तथा सामान्य बालकों का विश्लेषण

बालक	N	M	SD	t-value
अपचारी	15	78.13	23.13	3.15
सामान्य	15	72.33	15.16	

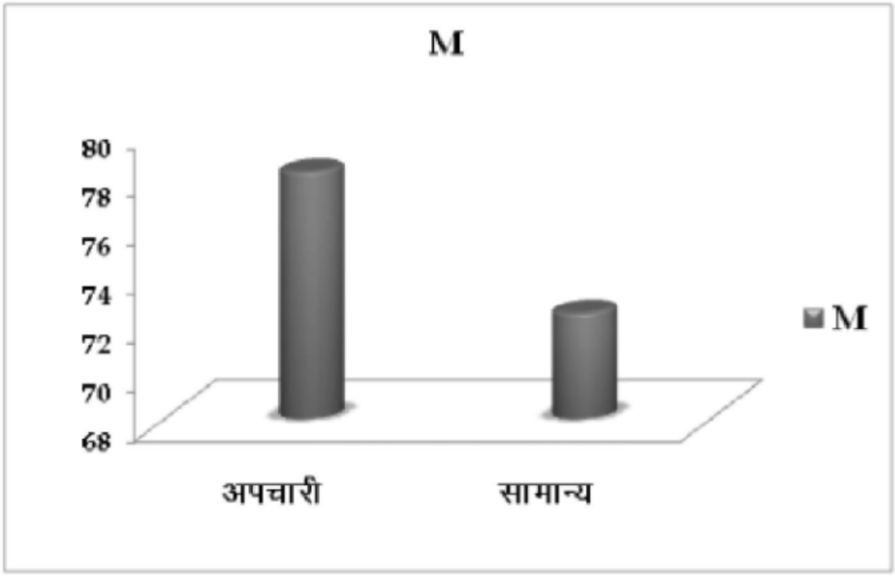

ग्राफ 1 अपचारी एवं सामान्य बालकों की आक्रमकता के मध्यमानों का दण्ड आरेख।

IV निष्कर्ष

अपचारी बालकों में सामान्य बालकों से अधिक आक्रमकता का स्तर सार्थक उच्च पाया गया।

V सुझाव एवं परिणाम

(क) बालकों के मन में अभाव की स्थिति नहीं बनने देनी चाहिए।

(ख) अनियंत्रित बालक मन पर नियंत्रण का प्रयास हो।

(ग) उद्दण्डता एवं अपचार को भली–भाँति समझकर ही बर्ताव करना आवश्यक है।

(घ) समय–समय पर बालक का व्यवहारिक आँकलन आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] **कुप्पुस्वामी, बी. (2003)** समाज मनोविज्ञान : एक परिचय पंचकुला : हरियाणा साहित्य अकादमी।

[2] **पाठक, पी.डी. (2003)** शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

[3] **बलौलिया, ए. एवं बायर्न, डी. (2004)** सामाजिक मनोविज्ञान, दिल्ली : पीयरसन एज्युकेशन।

[4] **भार्गव, एम. (2003)** विशिष्ट बालक, आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस।

[5] **भटनागर, एस. (2005)** अधिगम एवं विकास के मनो–सामाजिक आधार, मेरठ : लायन बुक हाउस।

[6] **सुलमान, एस. (2005)** उच्चतर समाज मनोविज्ञान, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।